21. निम्न में विशेष्य है
(a) पसिन (b) कमसिन
(c) सुन्दर (d) सुन्दरी

22. निम्न में प्रविशेषण है
(a) दैनिक (b) दीन
(c) काफी (d) मरणशील

23. निम्न में विशेषण है
(a) भागना (b) भगोड़ा
(c) भागा (d) भगा

उत्तरमाला

1.	(d)	**2.**	(a)	**3.**	(c)	**4.**	(b)	**5.**	(b)	**6.**	(a)	**7.**	(d)	**8.**	(c)	**9.**	(c)	**10.**	(b)
11.	(a)	**12.**	(d)	**13.**	(d)	**14.**	(c)	**15.**	(a)	**16.**	(c)	**17.**	(b)	**18.**	(d)	**19.**	(c)	**20.**	(c)
21.	(d)	**22.**	(c)	**23.**	(b)														

अध्याय 6

सन्धि

दो वर्णों के मेल से उत्पन्न होने वाले परिवर्तन को **सन्धि** कहते हैं। सन्धि में दो शब्द या पद एक-दूसरे से जुड़कर एक नए शब्द का निर्माण करते हैं। पहले शब्द का अन्तिम वर्ण दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण से मिलकर विकार उत्पन्न करते हैं। यह विकारजन्य सम्पर्क ही 'सन्धि' है। सन्धि को समझकर वर्णों को पृथक् करना, जिससे वे मूल रूप में आ जाएँ, 'सन्धि-विच्छेद' कहलाता है।

वर्णों के आधार पर सन्धि तीन प्रकार की होती हैं–

1. स्वर सन्धि

दो स्वरों के मिलने से जो विकार या रूप-परिवर्तन होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। दो स्वर आपस में मिलकर एक अन्य स्वर का निर्माण करते हैं तथा आपस में जुड़े शब्दों से एक तीसरे अर्थपूर्ण शब्द की उत्पत्ति करते हैं। स्वर सन्धि में स्वरों का आपसी मेल होता है।

स्वर सन्धि के पाँच होते भेद हैं–

(i) **दीर्घ स्वर सन्धि** दो सजातीय अथवा सवर्ण स्वर (जैसे—अ, आ आदि) मिलकर दीर्घ स्वर के रूप में परिवर्तित होते हैं। ऐसी सन्धि को दीर्घ स्वर सन्धि कहते हैं। यदि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ तथा ऋ के बाद ही ह्रस्व या दीर्घ स्वर जुड़ता है, तो दोनों मिलकर आ, ई, ऊ तथा ऋ के रूप में सामने आते हैं।

उदाहरण

अन्न	+	अभाव	=	अन्नाभाव	(अ + अ = आ)
देव	+	आलय	=	देवालय	(अ + आ = आ)
विद्या	+	अर्थी	=	विद्यार्थी	(आ + अ = आ)
विद्या	+	आलय	=	विद्यालय	(आ + आ = आ)
रवि	+	इन्द्र	=	रवीन्द्र	(इ + इ = ई)
हरि	+	ईश	=	हरीश	(इ + ई = ई)
रजनी	+	ईश	=	रजनीश	(ई + ई = ई)
भानु	+	उदय	=	भानूदय	(उ + उ = ऊ)
स्वयंभू	+	उदय	=	स्वयंभूदय	(ऊ + उ = ऊ)
पितृ	+	ऋण	=	पितृण	(ऋ + ऋ = ऋ)

(ii) **गुण स्वर सन्धि** यदि अ, आ के बाद इ, ई आए तो ए, उ, ऊ आए तो ओ तथा ऋ आए तो 'अर्' हो जाता है।

उदाहरण

सुर	+	इन्द्र	=	सुरेन्द्र	(अ + इ = ए)
देव	+	ईश	=	देवेश	(अ + ई = ए)
रमा	+	इन्द्र	=	रमेन्द्र	(आ + इ = ए)
सूर्य	+	उदय	=	सूर्योदय	(अ + उ = ए)
समुद्र	+	ऊर्मि	=	समुद्रोर्मि	(अ + उ = ओ)
महा	+	उदय	=	महोदय	(आ + उ = ओ)
गंगा	+	ऊर्मि	=	गंगोर्मि	(आ + ऊ = ओ)
देव	+	ऋषि	=	देवर्षि	(अ + ऋ = अर्)
महा	+	ऋषि	=	महर्षि	(आ + ऋ = अर्)

(iii) **वृद्धि स्वर सन्धि** अ या आ के बाद ए या ऐ हो, तो दोनों मिलकर ऐ, ओ या औ हो तो दोनों मिलकर औ हो जाता है। स्वर वर्ण के इस विकार को 'वृद्धि स्वर' सन्धि कहते हैं।

उदाहरण

एक	+	एक	=	एकैक	(अ + ए = ऐ)
मत	+	ऐक्य	=	मतैक्य	(अ + ऐ = ऐ)
सदा	+	एव	=	सदैव	(आ + ए = ऐ)
शिवा	+	ऐश्वर्य	=	शिवैश्वर्य	(आ + ए = ऐ)
परम	+	ओजस्वी	=	परमौजस्वी	(अ + ओ = औ)
परम	+	औषध	=	परमौषध	(अ + औ = औ)

(iv) **यण् स्वर सन्धि** इ, ई, उ, ऊ तथा ऋ के बाद यदि कोई भिन्न तथा विजातीय स्वर आता है तो इ, ई, का 'य्', उ, ऊ का 'व्' तथा 'ऋ' की जगह 'र्' हो जाता है। स्वर वर्ण के इस विकार को यण् स्वर सन्धि कहते हैं।

उदाहरण

यदि	+	अपि	=	यद्यपि	(इ + अ = य्)
इति	+	आदि	=	इत्यादि	(इ + आ = य्)

अति	+	उत्तम	=	अत्युत्तम	(इ + उ = य)
नि	+	ऊन	=	न्यून	(इ + ऊ = य)
नदी	+	अर्पण	=	नद्यर्पण	(ई + अ = य)
देवी	+	आगमन	=	देव्यागमन	(ई + आ = य)
मनु	+	अंतर	=	मन्वंतर	(उ + अ = व)
सु	+	आगत	=	स्वागत	(उ + आ = व)
अनु	+	एषण	=	अन्वेषण	(उ + ए = व)
पितृ	+	अनुमति	=	पित्रनुमति	(ऋ + अ = र्)
मातृ	+	आनन्द	=	मात्रानन्द	(ऋ + आ = र्)

(v) **अयादि स्वर सन्धि** ए, ऐ, ओ या औ के बाद कोई भिन्न अथवा विजातीय स्वर आता है, तो यह मेल ए का 'अय्', ऐ का 'आय्', ओ का 'अव' तथा औ का 'आव्' हो जाता है।

उदाहरण

ने	+	अन	=	नयन	(ए + अ = अय्)
नै	+	अक	=	नायक	(ऐ + अ = आय्)
पो	+	अन	=	पवन	(ओ + अ = अव्)
पौ	+	अन	=	पावन	(औ + अ = आव्)

2. व्यंजन सन्धि

व्यंजन से स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार को व्यंजन सन्धि कहा जाता है।

(i) यदि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण आता है या य, र, ल, व तथा कोई स्वर आए तो क्, च्, ट्, त्, प् के स्थान पर इसी वर्ग का तीसरा वर्ण आ जाता है;
जैसे–

दिक्	+	गज	=	दिग्गज	(क् + ग = ग)
सत्	+	वाणी	=	सद्वाणी	(त् + व = द्)
दिक्	+	अन्त	=	दिगंत	(क् + अ = ग)

(ii) यदि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद न् या म् के मेल से क्, च्, ट्, त्, प् अपने वर्ग के पंचम वर्ण में रूपान्तरित हो जाता है;
जैसे–

वाक्	+	मय	=	वाङ्मय	(क् + म = ङ)
उत्	+	नति	=	उन्नति	(त् + न = न)
जगत्	+	नाथ	=	जगन्नाथ	(त् + न = न)

(iii) त् या ट् के बाद यदि च् या फ् हो, तो त् या ट् के बदले च्; ज या झ हो, तो ज; ट् या ठ् हो, तो ट्; ड् या ढ् हो, तो ड तथा ल् हो, तो ल हो जाता है; जैसे–

उत्	+	चारण	=	उच्चारण	(त् + च = च)
सत्	+	जन	=	सज्जन	(त् + ज = ज)
उत्	+	डयन	=	उड्डयन	(त् + ड = ड)
उत्	+	लास	=	उल्लास	(त् + ल = ल)

(iv) म् के बाद यदि कोई स्पर्श व्यंजन वर्ण आए, तो 'म' का अनुस्वार तथा बाद वाले वर्ण का रूपान्तरण स्पर्श व्यंजन के वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है; जैसे–

अहम्	+	कार	=	अहंकार	(म् + क = ङ्)
सम्	+	गम	=	संगम	(म् + ग = ङ्)
किम्	+	चित	=	किंचित	(म् + च = ञ्)

(v) त वर्ग का च वर्ग से योग में च वर्ग तथा त वर्ग के ष्कार से योग में ट वर्ग हो जाता है;
जैसे–

महत्	+	छत्र	=	महच्छत्र	(त् + छ = छ)
द्रष्	+	ता	=	द्रष्टा	(ष् + त् = ट)

(vi) किसी वर्ग के अन्तिम वर्ण को छोड़कर शेष वर्णों के साथ 'ह' का मेल होता है, तो ह उस वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो जाता है तथा ह के साथ जुड़ने वाला वर्ण अपने वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है;
जैसे–

उत्	+	हत	=	उद्धत	(त् + ह = ध्)
उत्	+	हार	=	उद्धार	(त् + ह = ध्)

(vii) ह्रस्व स्वर के बाद 'छ' हो, तो 'छ' के पहले 'च्' जुड़ जाता है। दीर्घ स्वर के बाद 'छ' होने पर भी ऐसा ही होता है; जैसे–

अनु	+	छेद	=	अनुच्छेद
परि	+	छेद	=	परिच्छेद
शाला	+	छादन	=	शालाच्छादन

3. विसर्ग सन्धि

विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

(i) यदि विसर्ग के बाद च, छ हो, तो विसर्ग का 'श'; 'ट, ठ' हो तो 'ष' और 'त, थ' हो तो 'स' हो जाता है;
जैसे–

निः	+	चय	=	निश्चय	(विसर्ग + च = श्)
धनुः	+	टंकार	=	धनुष्टंकार	(विसर्ग + ट = ष्)
निः	+	तार	=	निस्तार	(विसर्ग + त = स्)

(ii) यदि विसर्ग के पहले इकार या उकार हो तथा विसर्ग के बाद क, ख, प, फ वर्ण हो, तो विसर्ग का ष् हो जाता है; जैसे–

निः	+	कपट	=	निष्कपट
निः	+	फल	=	निष्फल
निः	+	पाप	=	निष्पाप

(iii) यदि विसर्ग से पहले 'अ' हो तथा उससे जुड़ने वाला वर्ण क, ख, प, फ कुछ भी हो तो विसर्ग यथावत् रहता है; जैसे–

प्रातः	+	काल	=	प्रातःकाल
पयः	+	पान	=	पयःपान

(iv) यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो तथा उससे जुड़ने वाले शब्द का पहला वर्ण भी 'अ' हो, तो विसर्ग 'ओकार' हो जाता है तथा 'अ' का लोप हो जाता है; जैसे–

प्रथमः	+	अध्याय	=	प्रथमोध्याय
यशः	+	अभिलाषी	=	यशोभिलाषी

(v) यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और उससे जुड़ने वाला वर्ण अपने वर्ग का तीसरा, चौथा या पाँचवाँ वर्ण या य, र, ल, व, ह रहे, तो विसर्ग 'उ' हो जाता है, यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर 'ओ' हो जाता है; जैसे–

मनः	+	रथ	=	मनोरथ
यशः	+	धरा	=	यशोधरा
यशः	+	दा	=	यशोदा

(vi) यदि विसर्ग के पहले 'अ' और 'आ' को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आए अथवा जुड़ने वाले वर्ण में कोई स्वर हो या वह वर्ण अपने वर्ग का तीसरा, चौथा तथा पाँचवाँ वर्ण हो या य, र, ल, व, ह हो, तो विसर्ग 'र' हो जाता है; जैसे—

नि:	+	उपाय	=	निरुपाय
दु:	+	आत्मा	=	दुरात्मा
नि:	+	गुण	=	निर्गुण

(vii) यदि 'इ' 'उ' के बाद विसर्ग हो और उसके बाद 'र' आए, तो 'इ', 'उ' का क्रमश: 'ई', 'ऊ' हो जाता है तथा विसर्ग लुप्त हो जाता है; जैसे—

नि:	+	रव	=	नीरव
दु:	+	राज	=	दूराज
नि:	+	रस	=	नीरस

महत्त्वपूर्ण सन्धियाँ

अभि	+ उदय	= अभ्युदय	उत्	+ नयन	= उन्नयन	उत्	+ श्वास	= उच्छ्वास	भाग्य	+ उदय	= भाग्योदय
अति	+ अधिक	= अत्यधिक	उन्	+ माद	= उन्माद	उत्	+ योग	= उद्योग	मुनि	+ इन्द्र	= मुनीन्द्र
अति	+ आचार	= अत्याचार	तथा	+ एव	= तथैव	उत्	+ भव	= उद्भव	मही	+ इन्द्र	= महीन्द्र
आत्म	+ उत्सर्ग	= आत्मोत्सर्ग	तिर:	+ कार	= तिरस्कार	कृत्	+ अन्त	= कृदन्त	स्व	+ अर्थ	= स्वार्थ
अम्बु	+ ऊर्मि	= अम्बूर्मि	तप:	+ वन	= तपोवन	भो	+ अन	= भवन	सम्	+ योग	= संयोग
आशी:	+ वाद	= आशीर्वाद	देव	+ इन्द्र	= देवेन्द्र	पो	+ अन	= पवन	सत्	+ चरित्र	= सच्चरित्र
आवि:	+ कार	= आविष्कार	देव	+ ईश	= देवेश	पौ	+ अन	= पावन	सप्त	+ ऋषि	= सप्तर्षि
अत:	+ एव	= अतएव	दिक्	+ अम्बर	= दिगम्बर	पौ	+ अक	= पावक	सर:	+ ज	= सरोज
अह:	+ निश	= अहर्निश	दु:	+ दिन	= दुर्दिन	पौ	+ इत्र	= पवित्र	श्रेय:	+ कर	= श्रेयस्कर
अध	+ गति	= अधोगति	दु:	+ जन	= दुर्जन	मन:	+ ज	= मनोज	सदा	+ एव	= सदैव
इति	+ आदि	= इत्यादि	नम:	+ कार	= नमस्कार	मृग	+ इन्द्र	= मृगेन्द्र	सम्	+ गठन	= संगठन
उप	+ ईक्षा	= उपेक्षा	नि:	+ जल	= निर्जल	दीप	+ ईश	= दीपेश	सम्	+ वाद	= संवाद
उत्	+ गम	= उद्गम	परम	+ ईश्वर	= परमेश्वर	जीत	+ ईश	= जीतेश	वधू	+ उत्सव	= वधूत्सव

✓ अभ्यास के लिए प्रश्न

1. 'सूर्योदय' का सन्धि-विच्छेद क्या है?
(a) सूर्यो + दय (b) सूर्य + उदय
(c) सूर्ये + उदय (d) सूर्य: + उदय

2. 'व्यर्थ' का सन्धि-विच्छेद क्या है?
(a) व्यय + अर्थ (b) व + अर्थ
(c) वि + अर्थ (d) व्य + अर्थ

3. 'अन्तर्गत' का सन्धि-विच्छेद क्या है?
(a) अन्त: + गत (b) अन्तर + गत
(c) अन्त + गर्त (d) अन्त + गत

4. 'नारायण' का सही-सन्धि विच्छेद क्या है?
(a) नर + आयण (b) नार + आयन
(c) नार + अयन (d) नार + अयण

5. 'नायक' का सन्धि-विच्छेद क्या है?
(a) ना + अक (b) न + अक
(c) ने + अक (d) नै + अक

6. 'साष्टांग' का सन्धि-विच्छेद क्या है?
(a) सास + टांग
(b) सा + अष्टांग
(c) स + अष्ट + अंग
(d) स: + अष्ट + अंग

7. 'नमस्कार' में निम्न में से कौन-सी सन्धि है?
(a) विसर्ग सन्धि (b) व्यंजन सन्धि
(c) यण् स्वर सन्धि (d) दीर्घ स्वर सन्धि

8. 'यद्यपि' में निम्न में से कौन-सी सन्धि है?
(a) यण् स्वर सन्धि
(b) गुण स्वर सन्धि
(c) वृद्धि स्वर सन्धि
(d) अयादि स्वर सन्धि

9. 'वेदर्षि' में कौन-सी सन्धि है?
(a) गुण स्वर सन्धि (b) दीर्घ स्वर सन्धि
(c) व्यंजन सन्धि (d) विसर्ग सन्धि

10. 'लघूर्मि' में कौन-सी सन्धि है?
(a) अयादि स्वर सन्धि (b) दीर्घ स्वर सन्धि
(c) वृद्धि स्वर सन्धि (d) यण् स्वर सन्धि

11. 'वार्तालाप' का सही सन्धि-विच्छेद क्या है?
(a) वार्ता + अलाप (b) वार्ता + आलाप
(c) वर्ता + अलाप (d) वार्ता: + आलाप

12. 'हितैषी' का सही सन्धि-विच्छेद क्या है?
(a) हितै + अषी (b) हित + ऐषी
(c) हित + एषी (d) हि: + अषी

13. 'पुनर्जन्म' का सही सन्धि-विच्छेद क्या है?
(a) पुन: + जन्म (b) पुनर् + जन्म
(c) पुन: + आजन्म (d) पुन + जर्न्म

14. 'निर्मल' का सही सन्धि-विच्छेद क्या है?
(a) नी: + मल (b) नि: + मल
(c) नि + र्मल (d) नि + मल

15. 'मुनीश' में कौन-सी सन्धि है?
(a) दीर्घ स्वर सन्धि
(b) वृद्धि स्वर सन्धि
(c) गुण स्वर सन्धि
(d) यण् स्वर सन्धि

16. 'देवी + ऐश्वर्य' किसका सन्धि-विच्छेद है?
(a) देवेश्वर्य (b) देवैश्वर्य
(c) देवीश्वर्य (d) देवोश्वर्य

17. 'भौ + ऊक' किसका सन्धि-विच्छेद है?
(a) भौंक (b) भावुक
(c) भौमक (d) भौइक

18. 'वाक् + मय' किस शब्द का सन्धि-विच्छेद है?
(a) वाक्मय (b) वाङ्मय
(c) वायकोम (d) वाक्यम्

19. 'विद्याभ्यास' का सन्धि-विच्छेद क्या होगा?
(a) विद्या + अभियास (b) विद्य + अभ्यास
(c) विद्या + अभ्यास (d) विद्या + भ्यास

20. 'पित्रादेश' का सन्धि-विच्छेद क्या होगा?
(a) पित्र + आदेश (b) पितृ + आदेश
(c) पित्रा + आदेश (d) पिता + देश

21. सन्धि के मुख्य भेद हैं
(a) दो (b) तीन
(c) चार (d) पाँच

22. दो स्वरों के योग से बनने वाला शब्द किस सन्धि के अन्तर्गत आता है?
(a) यण् सन्धि (b) व्यंजन सन्धि
(c) विसर्ग सन्धि (d) स्वर सन्धि

23. निम्न में से कौन स्वर सन्धि का भेद नहीं है?
(a) विसर्ग सन्धि (b) दीर्घ सन्धि
(c) यण् सन्धि (d) गुण सन्धि

24. किस सन्धि में स्वरों का परिवर्तन य्, र्, ल्, व् में होता है?
(a) अयादि सन्धि (b) वृद्धि सन्धि
(c) गुण सन्धि (d) यण् सन्धि

25. सजातीय लघु तथा दीर्घ स्वरों का मिलकर दीर्घ होने का लक्षण किस सन्धि में होता है?
(a) दीर्घ सन्धि (b) वृद्धि सन्धि
(c) गुण सन्धि (d) अयादि सन्धि

26. विसर्ग सन्धि में किसका मेल होता है?
(a) विसर्ग के साथ विसर्ग
(b) बिसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन
(c) विसर्ग और स्वर
(d) विसर्ग और व्यंजन

27. निम्न में से कौन-सा सन्धि-विच्छेद 'व्यंजन सन्धि' में नहीं आता?
(a) उत् + अय (b) किम् + चित
(c) जगत् + नाथ (d) पौ + अन

28. 'प्रत्येक' में कौन-सी सन्धि है?
(a) यण् सन्धि (b) गुण सन्धि
(c) वृद्धि सन्धि (d) अयादि सन्धि

29. निम्न में से किस में व्यंजन सन्धि नहीं है?
(a) दिग्गज (b) निर्विकार
(c) अहंकार (d) संसार

30. निम्न में से कौन विसर्ग सन्धि नहीं है?
(a) निः + कपट
(b) पदः + उन्नति
(c) सरः + ज
(d) निः + उपाय

31. 'पवन' का सही सन्धि-विच्छेद क्या है?
(a) पव + अन् (b) पव + न्
(c) पः + अवन (d) पो + अन

32. इत्यादि का सही सन्धि-विच्छेद क्या है?
(a) इति + यादि (b) इति + आदि
(c) इत्य + आदि (d) इती + आदि

33. 'यशोगान' का सही सन्धि-विच्छेद क्या है?
(a) यशः + गान (b) यशो + गान
(c) यशः + उगान (d) यशो + उगान

34. 'यशोदा' का सही सन्धि-विच्छेद क्या है?
(a) यश + उदा (b) यशः + दा
(c) यश + ओदा (d) यः + अशोदा

35. निम्न में से किस शब्द में विसर्ग सन्धि नहीं है?
(a) निश्चय (b) निष्ठुर
(c) नितान्त (d) निश्छल

36. 'महोदय' का उचित सन्धि-विच्छेद है
(a) महा + ऊदय (b) महा + उदय
(c) महो + दय (d) महा + ओदय

37. 'महौषधम' में कौन-सी सन्धि है?
(a) दीर्घ सन्धि (b) वृद्धि सन्धि
(c) गुण सन्धि (d) अयादि सन्धि

38. 'निश्छल' में कौन-सी सन्धि है?
(a) विसर्ग सन्धि (b) यण् सन्धि
(c) दीर्घ सन्धि (d) गुण सन्धि

39. 'विपज्जाल' शब्द का सन्धि-विच्छेद है
(a) विपः + जाल (b) विपत् + जाल
(c) विपस + जाल (d) विपद् + जाल

40. 'कपीश' में कौन-सी सन्धि है?
(a) दीर्घ सन्धि (b) वृद्धि सन्धि
(c) गुण सन्धि (d) यण् सन्धि

41. निम्न में से 'नयन' का सही सन्धि-विच्छेद क्या है?
(a) न + अयन (b) नः + अयन
(c) ने + अन (d) नय + अयन

उत्तरमाला

1.	(b)	2.	(c)	3.	(a)	4.	(c)	5.	(d)	6.	(c)	7.	(a)	8.	(a)	9.	(a)	10.	(b)
11.	(b)	12.	(c)	13.	(a)	14.	(b)	15.	(a)	16.	(b)	17.	(b)	18.	(b)	19.	(c)	20.	(b)
21.	(b)	22.	(d)	23.	(a)	24.	(d)	25.	(a)	26.	(b)	27.	(d)	28.	(a)	29.	(b)	30.	(b)
31.	(d)	32.	(b)	33.	(a)	34.	(b)	35.	(c)	36.	(b)	37.	(b)	38.	(a)	39.	(b)	40.	(a)
41.	(c)																		

अध्याय 7

समास

समास का अर्थ 'संक्षिप्त' होता है। कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक अर्थ प्रकट करना 'समास' का लक्ष्य होता है। वस्तुतः दो या दो से अधिक शब्दों का परस्पर सम्बन्ध बताने वाले शब्दों अथवा प्रत्ययों का लोप होने पर जो नया शब्द बनता है, उसे **सामासिक शब्द** अथवा **सामासिक पद** कहते हैं।

दो या दो से अधिक शब्दों अथवा पदों के संयोग को **समास** कहा जाता है। 'सामासिक शब्द' अथवा 'पद' को अर्थ के अनुकूल विभाजित करना 'विग्रह' कहलाता है।

सामान्यतया समास के चार भेद होते हैं

1. अव्ययीभाव समास

जिस सामासिक पद का पूर्वपद प्रधान हो तथा सामासिक पद अव्यय हो, उसे अव्ययीभाव कहते हैं। इस समास में सम्पूर्ण पद क्रिया-विशेषण अव्यय हो जाता है; जैसे—प्रतिदिन, यथासम्भव, आमरण इत्यादि।